शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

**सम्पादकीय**

# हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं में 'वीणा' का प्रदेय

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

(शताब्दी की ओर अग्रसर वीणा पत्रिका के स्थापना दिवस 6 अक्टूबर को वीणा संवाद केंद्र द्वारा आयोजित चर्चा में दिया गया वक्तव्य)

'वीणा' सौ साल पूरे करने की दहलीज पर आ खड़ी हुई है। श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना के लगभग 17 वर्ष बाद स्वप्न दृष्टाओं ने हिन्दी की श्रीवृद्धि के लिए पत्रिका प्रकाशन की योजना बनाकर उसे धरातल पर उतारा। पहला कदम रखते हुए तत्कालीन हिन्दी सेवियों ने इस बात पर तनिक भी विचार नहीं किया होगा कि यह पत्रिका शताब्दी की ओर अग्रसर हो जाएगी। उनके मन में केवल एक ही ललक थी कि मां भारती के मंदिर में हिन्दी भाषा और बोली में अभिव्यक्ति के दीपक की लौ निरंतर प्रज्ज्वलित रहे। हम कल्पना ही कर सकते हैं कि गुलामी के दौर में किसी पत्रिका को प्रकाशित करना तलवार की धार पर चलने के समान था। मध्यभारत के राजाओं को साधना कितनी टेढ़ी खीर रहा होगा। राजतंत्र और धनाभाव के चलते न जाने कितनी श्रेष्ठ पत्रिकाओं ने दम तोड़ दिया। इसके अनेक उदाहरण इतिहास में मौजूद हैं। इसके बावजूद 'वीणा' पत्रिका का पिछले 96 साल से संवादी स्वर के साथ बजते रहना किसी आश्चर्य से कम नहीं है। दूसरी ओर आश्चर्य इसलिए नहीं होना चाहिए क्योंकि श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य की भूमि पर सहस्राब्दी पुरुष महात्मा गांधी के न सिर्फ चरण पड़े, बल्कि यहीं से उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का जयघोष किया। उस दौर का वह भी सत्याग्रह का हथियार ही था। 'वीणा' के प्रथम संपादक पण्डित अम्बिकाप्रसाद त्रिपाठी के जटाजूट से निकली गंगा का पाट आज न सिर्फ देश में बल्कि विदेश तक विस्तीर्ण हो गया है। वाद-विवाद और प्रतिवाद से दूर 'वीणा' का संवादी स्वर मौन होते हुए भी मुखर है। 'वीणा' सिर्फ हिन्दी अथवा भारतीय साहित्य को ही समर्पित नहीं है, बल्कि इसने कृषि, विज्ञान, धर्म, संस्कृति, इतिहास, सिनेमा आदि को भी अपने में समाहित किया है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि साहित्यिक पत्रिका को उसके लेखक और पाठक समृद्ध करते हैं, परंतु उन तक सामग्री भेजने में संपादक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वास्तव में किसी भी साहित्यिक पत्रिका की पहचार उसके संपादकीय से होती है। एक संपादक समकालीनता को परिभाषित करता हुआ आगत और अनागत के बीच सेतु का काम करता है। 'वीणा' में अपने समकालीन परिवेश के दिशा संकेत किए गए हैं। इससे लेखकों और पाठकों के लिए ज्योतिपथ निर्मित हुआ है। शब्दब्रह्म की साधना से अर्जित पुण्य प्रताप से ही 'वीणा' आज भी झंकृत हो रही है। यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है कि 'वीणा' को युग के अनुरूप संपादक मिलते चले गए। उनके संपादकीय में युग प्रतिध्वनित होता है। 'वीणा' ने अपने प्रकाशन वर्ष से अभी तक विविध विषयों पर 31 विशेषांक प्रकाशित किए हैं, जिसे साहित्य जगत में अच्छा प्रतिसाद

मिला है। वीणा ने देश की गुलामी के दौर से लेकर आजाद भारत के साहित्यिक मोड़ों को बहुत नजदीक से देखा है। वीणा के पृष्ठ पर साहित्य मनीषियों द्वारा अंकित शब्द-राशि में एक पूरे युग की ध्वनि सुनाई देती है।

सामाजिक विमर्श की दृष्टि से 'वीणा' का महत्व असंदिग्ध है। सामाजिक संदर्भों से जुड़कर ही साहित्यिक पत्रिका अपनी प्रासंगिकता बनाये रखती है। 'वीणा' में प्रकाशित संपादकीय का शोधात्मक दृष्टि से भी अध्ययन किया गया है। इन संपादकीयों में आशा-निराशा के स्वर सुनायी देते हैं। एक ओर भारत की ऊर्जावान सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत का प्रकाशन है तो दूसरी ओर पीढ़ियों के संवेदनाशून्य हो जाने की पीड़ा भी है। इनमें असंतुलित विकास और वैज्ञानिकता के अभावों की भी चर्चा है। सामाजिक संबंधों में व्याप्त भ्रष्ट आचार पर भी लेखनी चलायी गयी है। पूंजी अपने आप में खराब नहीं होती है, लेकिन जब यह पूंजी वाद में परिवर्तित होकर जनसामान्य का शोषण करने पर उतारू हो जाती है तब सामाजिक समरसता कायम रखना दूभर हो जाता है। हमारी परंपराओं में संस्कार, त्याग, क्षमा, दया, करुणा जैसे शब्दों को कालबाह्य मानकर तिरस्कृत किया जा रहा है। बहुत बड़ी संख्या सिर्फ अपने सुख साधनों को जुटाने में जमीन-आसमान एक कर ही है। अतिव्यावसायिक प्रवृत्ति ने आत्मघातकी स्वरूप धारण कर लिया है। ऐसे में भावुक हृदय पाठक को संतुष्ट करने में संपादक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। वह पाठकों के साथ संवाद स्थापित कर सकारात्मक चिंतन की अभिवृद्धि सहायता करता है। आज 'वीणा' ने एक संज्ञा ग्रहण कर ली है।

'वीणा' आज से तीन-चार साल बाद अपना शताब्दी समारोह मनाएगी। इसके सामने डिजिटल क्रांति को अपनाने की चुनौती उपस्थित है। वीणा के संपादक श्री राकेश शर्मा के पुराने अंकों को सहेजने के लिए डिजिटलाइजेशन की बात कह चुके हैं। यह बात सच है कि जब 'वीणा' को इंटरनेट माध्यम पर खोजा जाता है तब नाममात्र के परिणाम प्राप्त होते हैं। एक्सएमएल, एचटीएमएल तकनीक और यूनिकोड का उपयोग करके 'वीणा' को अधिक लोकप्रिय और उपयोगी बनाया जा सकता है। इतिहासज्ञों और शोधार्थियों की दृष्टि से देखा जाए तो वीणा में प्रकाशित सामग्री दुर्लभ किस्म की है। कागज को सहेजने की अपनी सीमा होती है। इसका यथाशीघ्र डिजिटलाइजेशन कर लिया जाना चाहिए। यह भागीरथी कार्य है। इंटरनेट पर ईपुस्तकालय डॉट कॉम नाम की वेबसाइट है। इस वेबसाइट पर पुरानी से पुरानी और नयी से नयी पुस्तकें पीडीएफ में उपलब्ध हैं। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा की वेबसाइट पर अनेक पत्र-पत्रिकाओं को सहेज लिया गया है। वीणा का डिलिटलाइजेशन किसी परियोजना से कम नहीं है। इसके लिए धन और तकनीक के जानकारों की आवश्यकता होगी। 'वीणा' की शताब्दी से पहले यदि इस कार्य को संपन्न कर लिया जाता है, तो सुधी पाठकों के साथ-साथ साहित्य जगत का बहुत लाभ होगा।